राज्य परिशिष्ट 15

[यीशु के दृष्टान्त]

दस मुहरें

लूका 19:11-27 में "दस मुहरों" का दृष्टान्त परमेश्वर के राज्य में पुरुस्कार के बारे में बताते हैं।

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें लूका 19:11-27

---

1. दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगे।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

राजपद पाने के लिए दूर देश को जाने वाला धनी मनुष्य। राजपद पाने के लिए रोम जाना यीशु के दिनों में कोई असामान्य बात नहीं थी। इस कहानी में, इस धनी व्यक्ति ने पहले से ही ऊँचे पद का पदभार संभाल रखा था, क्योंकि उसके पास पहले से ही प्रजा और बहुत से दास थे।

उसने अपने दस दासों को बुलाकर प्रत्येक को एक-एक मुहर दीं। यह धनी व्यक्ति चाहता था कि उसके दास काम करने के लिए इस धन का उपयोग करें। एक "मुहर" एक यूनानी सिक्के और एक सौ द्राख़मा (चाँदी के सीक्के) के बराबर थी, और एक द्राख़मा एक दिन के काम लिए एक दिन की मजदूरी थी। तोड़ों के दृष्टान्त के विपरीत इस धनी ने अपने प्रत्येक दास को एक बराबर ही धनराशि दी।

सौंपा गया कार्य (काम)। उस धनी मनुष्य ने अपने दासों को बुलाकर उन्हें यह आज्ञा दी कि, "मेरे लौट आने तक इस धन से लेन-देन करो।" हालाँकि एक मुहर एक तोड़े की तुलना में बहुत छोटी थी, लेकिन इस दृष्टान्त में धन पर ज़ोर नहीं दिया गया है, बल्कि धन के साथ क्या किया जाता है, इस बात पर ज़ोर दिया गया है। धनी मनुष्य के राजपद पाकर वापस आने के समय से पहले धनराशि को काम में लगाना बहुत ज़रूरी है।

उसके नगर के रहनेवाले कुछ लोगों ने उससे बैर रखा ओर उसे अस्वीकार कर दिया। यीशु के दिनों में यह बात भी असामान्य नहीं थी। कुछ लोगों ने सामर्थ्य और प्रसिद्धि पाने की इच्छा रखी और अपने पद के प्रभाव को सुरक्षित रखने के प्रयास के लिए रोम की यात्रा की। हालाँकि, एक ही देश में रहते हुए कुछ अन्य लोग ऐसे भी थे जिन्हें अपने ऊपर होने वाले अत्याचार का डर था। इसलिए वे अक्सर रोम में अपना एक प्रतिनिधि मण्डल भेजते थे ताकि उस मनुष्य के राजपद पाने के प्रयासों को विफल किया जा सके। ऐसा मसीह के आने के ठीक पहले इतिहास में, हाइरनस द्वितीय और अरिस्टोबुलस के साथ-साथ आर्केलास के साथ हुआ था।

राजपद पाकर लौट आने पर उसने अपने विश्वासयोग्य दासों को पुरस्कृत लिया। राजपद पाकर इस धनी ने अपने दासों को बुलाया ताकि वे आकर इसका हिसाब दें कि प्रत्येक को दी गयी एक-एक मुहर का उन्होंने क्या किया। तब पहले दास ने विनम्रतापूर्वक बताया कि हे स्वामी मैंने तेरी मुहर से दस और मुहरें कमाई हैं। इसी प्रकार दूसरे दास ने भी आकर बताया कि, हे स्वामी मैंने पाँच और मुहरें कमाई हैं। उस स्वामी ने अपने विश्वासयोग्य दासों की सराहना की और उनके द्वारा कमाए गए लाभ के ठीक बराबर उन्हें और कार्य सौंपा। उन्हें क्रमशः दस और पाँच नगरों के काम पर अधिकार दिया।

राजपद पाकर लौटने पर स्वामी ने अपने अविश्वासी दास को दण्डित किया और उन बैरियों को जो नहीं चाहते थे कि वह उन पर राज्य करें, उन्हें मरवा डाला। तोड़ों के दृष्टान्त में जिस प्रकार उस दास ने अपने तोड़े को किसी काम में नहीं लिया, वह दुष्ट और आलसी दास था। उसने अपने स्वामी पर कठोर और अनुचित होने का भी आरोप लगाया। और इसलिए उसके स्वामी ने उसी के मुँह से निकले शब्दों के कारण उसे दोषी ठहराया। यदि यह सेवक वास्तव में यह मानता कि उसका स्वामी कठोर और अनुचित है, तो वह अपने स्वामी से बहुत डरा हुआ होता और दण्ड से बचने के लिए उसने बहुत मेहनत की होती। लेकिन उसने जो कहा उस बात पर उसने स्वयं ही विश्वास नहीं किया। यह बात साबित करती है कि उस दास ने सच नहीं बोला, बल्कि अपनी लापरवाही और आलस्य के कारण उसने अपने स्वामी को ही दोषी ठहराने का प्रयास किया।

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी" के संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल या उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका 19:1-11 में पाई जाती है।

यीशु ने दस मुहरों के दृष्टान्त को जक्कई के घर के आस-पास उपस्थित लोगों को बताया (लूका 19:2)। वहाँ उपस्थित कुछ लोग कुड़कुड़ाकर यीशु की आलोचना करने लगे, और कहने लगे कि वह एक पापी मनुष्य के यहाँ अतिथि बनकर जा रहा है, जो पहले ही भ्रष्ट चुंगी लेनेवालों का सरदार है (लूका 19:7), जबकि अन्य लोग यीशु को यह कहता सुन बहुत आनंदित थे कि "वह खोये हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है " (लूका 19:10)। यीशु ने यह दृष्टान्त लोगों से इसलिए कहा,

क्योंकि वे सोचते थे, कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट होने वाला है (लूका 19:11)। यीशु के समय में यहूदी निरंतर परमेश्वर के राज्य के प्रगट होने की बाट जो रहे थे (यूहन्ना 6:15)। वे ऐसा मानते थे कि परमेश्वर का राज्य एक बाहरी सांसारिक राज्य के सामान होगा जो यरूशलेम और यहूदियों के केंद्र के रूप में होगा, और उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि परमेश्वर का राज्य बस अभी प्रगट होने वाला है। यहाँ तक कि यीशु के चेलों को भी ऐसा ही लगता था (मरकुस 10:35-45; प्रेरितों के काम 1:6)।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 19:12-27 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग कहानी में दिया गया है।

यह परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित है और विशेष रूप से यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर क्या होने के विषय में है। इसकी परिस्थिति बताती है कि इस दृष्टान्त को कुछ लोगों की सामान्य अपेक्षाओं को देखते हुए बताया गया होगा, क्योंकि उनका ऐसा मानना था कि परमेश्वर का राज्य बस अभी प्रगट होने वाला है (लूका 19:11)।

यीशु का उद्देश्य प्रगट होने वाले परमेश्वर के राज्य के बारे में कुछ हानिकारक विचारों को प्रभावरहित करना था :
मत्ती 8:11-12 और 21:42-44 के अनुसार, उसने यह प्रचार किया कि परमेश्वर का राज्य इस्राएल के एक राष्ट्र तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उसने इसमें दुनिया के सभी राष्ट्रों को शामिल किया था। इस दृष्टान्त में कहीं भी इस्राएल राष्ट्र की राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का कोई संकेत नहीं है!

लूका 19 के अनुसार, अपने चरण में परमेश्वर के राज्य की बाहरी अभिव्यक्ति में तत्काल भविष्य की बात नहीं बताई गई। राजा के रूप में उसके (यानी प्रभु यीशु मसीह के) आगमन से पहले काफी लम्बा समय बीत जाएगा। इसलिए उस समय के दौरान स्वामी द्वारा सेवकों को जो भी काम सौंपा गया है, उसे काम में लाना चाहिए।

मत्ती 25 और लूका 19 के अनुसार, प्रत्येक सेवक को परमेश्वर द्वारा प्रदत्त अपने कर्तव्यों के प्रदर्शन में विश्वासयोग्य और मेहनती होना चाहिए। अंतिम न्याय और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में अपने अंतिम रूप में परमेश्वर के राज्य की स्थापना के लिए, विश्वास और परिश्रम को पुरस्कृत किया जाएगा, जबकि अविश्वासी और लापरवाह लोगों को दण्डित किया जाएगा। परमेश्वर का राज्य पहले से ही मौजूद है (मत्ती 12:28) और इसलिए अब हमें पहले से ही सौंपें गए ज़िम्मेदारियों का फायदा उठाना चाहिए।

दृष्टान्त की पहली व्याख्या या अनुप्रयोग लूका 19:26 में पाई जाती है, "मैं तुमसे कहता हूँ, कि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं, उससे वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा।" अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह अपने सभी सेवकों के साथ सभी बातों का लेखा लेगा। तोड़ों के दृष्टान्त के समान ही, इसके अनुपयोग में बहुत महत्वपूर्ण सिद्धान्त सीख मिलती है: जो भी मनुष्य उसे सौंपी गई क्षमताओं (तोड़े या मुहरों के सामान) और अवसरों का फायदा उठाएगा और इन बातों का अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करेगा, उसे पुरस्कृत किया जाएगा। लेकिन जो कोई भी अपनी क्षमताओं और अवसरों का फायदा उठाने में असफल रहा और फलस्वरूप उसे कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ, उसे दण्डित किया जाएगा। परमेश्वर ने हमें जो भी कुछ सौंपा है, उसका उपयोग करने की उपेक्षा करने से, हम वह सब कुछ खो देंगे जो मूल रूप से हमें सौंपा गया था। केवल तोड़ों और योग्यता का उपयोग करने से, मनुष्य अपने आत्मिक धन को बढ़ाएगा! [24]

[24] जो भी कोई व्यक्ति शिष्यता समूह, बाइबल अध्ययन समूह, या कलीसिया के अन्य सेवा कार्यों में भाग लेने वाले अवसरों का लाभ उठाने में असफल रहता है, तो अंततः उसके पास जो कुछ है, वह सब खो देगा!

दृष्टान्त की दूसरी व्याख्या या अनुप्रयोग लूका 19:27 में पाई जाती है। अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह अपने सभी लोगों (पृथ्वी पर सभी लोगों) का न्याय करेगा। जिस किसी ने भी अपने ऊपर यीशु मसीह को राजा होने से अस्वीकार कर दिया उसे कठोर दण्ड दिया जाएगा। यूहन्ना 3:18,36 और 2थिस्सलुनीकियों 1:7-10 के अनुसार, विशेषकर सुसमाचार (यीशु मसीह के सुसमाचार) को अस्वीकार करने पर कठोर दण्ड दिया जाएगा। वे शत्रु, जो अपने ऊपर यीशु मसीह को राजा नहीं बनाना चाहते, वे दण्ड (उसके क्रोध, अस्वीकृति और नरक में दण्ड) के पात्र हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो पाप का कारण बनता है और बुराई[25] करता है उसे परमेश्वर के राज्य से बाहर निकाल दिया जाएगा और आग के कुण्ड (नरक) में डाल दिया जाएगा (मत्ती 13: 40-42)।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र-बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

धनी मनुष्य राजपद प्राप्त करता है। यह एक प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि यह यीशु की ओर संकेत करता है। यीशु दृष्टान्त की प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग करके यह प्रकट कर रहा था कि, अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के बाद, वह स्वर्ग में परमपिता परमेश्वर के पास जाएगा, जहाँ वह सम्पूर्ण सृष्टि पर अधिकार प्राप्त करेगा! उसे अपने उद्धार के निपुण कार्य के लिए पुरस्कार के रूप में यह राज प्राप्त होगा (मत्ती 28:18; फिलिप्पियों 2:5-11; प्रकाशितवाक्य 5:1-14)। राजाओं के राजा के रूप में, यीशु मसीह स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठेंगे और वह कलीसिया के हित में सम्पूर्ण सृष्टि पर शासन करेंगे (इफिसियों 1:20-23; प्रकाशितवाक्य 1:5)।

उसने अपने दस दासों में प्रत्येक को एक-एक मुहर को दिया। महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि प्रत्येक दास को कितना प्राप्त हुआ, बल्कि यह, कि प्रत्येक दास को एक ही राशि मिली, अर्थात् एक मुहर! यीशु यह नहीं समझाते, कि एक मुहर का क्या अर्थ है। बल्कि यह निश्चित रूप से यीशु मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच अपने सेवकों को सौंपे गए कार्य का प्रतिनिधित्व करता है। तोड़ों के दृष्टान्त के विपरीत, राजा अपने प्रत्येक विश्वासी दास को उतने ही धन से पुरस्कृत करता है, जितना उसने कमाया। इससे यह पता चलता है कि दास वे लोग हैं जिन्हें एक विशेष कार्य सौंपा गया है, और जिसमें प्रत्येक दास के लिए यह कार्य एक समान ही कार्य है। यह निश्चित रूप से उस सौंपे गए कार्य का प्रतीक है, जिसे यीशु ने संसार में अपने प्रत्येक सेवक को सौंपा था। उस सन्दर्भ के प्रकाश में, जिसमें यीशु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र खोये हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है", मुहर संसार में खोए हुए लोगों को सुसमाचार सुनाने और उन्हें चेला बनाने के कार्य का प्रतिनिधित्व कर सकती है। लेकिन फिर भी, हम इस बात को इस तरह नहीं देख सकते, क्योंकि यीशु इस दृष्टान्त में मुहर के अर्थ को नहीं बताते हैं, इसलिए मुहर का एक विशेष अर्थ मानना गलत होगा। ज़ोर इस बात पर नहीं है कि उनके सेवकों को

[25] लौटरी लगने के बारे में सोचना, जुआ खेलना, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, कैसीनो खेलना, नशीले पद्धार्थों के वितरण और आदान-प्रदान करना, अश्लील चित्र या वीडियो देखना, मनुष्यों को बंधुआ बनाना, प्रेम-प्रसंग की चाहत रखने वाले लड़के, बाल-मजदूरी और बाल-सैनिक आदि।

क्या सौंपा गया था, बल्कि इस बात पर है कि उन्हें क्या काम सौंपा गया था।

सौंपा गया काम (कार्य)। यह विवरण प्रासंगिक है, क्योंकि यह केंद्रीय बिन्दु या दृष्टान्त के मुख्य संदेश की ओर इशारा करता है। धनी मनुष्य ने अपने दासों को आदेश दिया, "मेरे लौट आने तक लेन-देन करना।" हालाँकि एक मुहर एक तोड़े से बहुत छोटी थी, इस कहानी में ज़ोर धन की मात्रा पर नहीं, बल्कि धन के साथ क्या किया जाता है उस बात पर ज़ोर दिया गया है। धन का उपयोग उस समय तक काम करना चाहिए, जब तक धनी मनुष्य राजपद पाकर लौट न आए! परमेश्वर के राज्य के लोगों को यीशु मसीह द्वारा उन्हें जो कुछ भी सौंपा गया है उसका उपयोग करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। उन्हें जो सौंपा गया है, उसे अप्रयुक्त नहीं छोड़ना चाहिए। उन्हें अपने सौंपे गए कार्य को पूरी लगन और परिश्रम से करना चाहिए। यदि, उदाहरण के लिए, "मुहर" सुसमाचार की उद्घोषणा का प्रतिनिधित्व करती है, तो कार्य सुसमाचार का पालन करना और संसार में खोए हुए सुसमाचार की घोषणा करना है। और अगर "मुहर" समाज में किसी कार्य या समारोह में परमेश्वर की सेवा करने के कार्य का प्रतिनिधित्व करती है (उदाहरण के लिए, एक दुकानदार या डॉक्टर होने के नाते), तो उस सौंपे गए कार्य को पूरी ईमानदारी और लगन से पूरा किया जाना चाहिए।

कुछ लोगों ने उस धनी मनुष्य से घृणा की और उसे अस्वीकार कर दिया, लेकिन फिर भी उसे राजपद मिला! तोड़ों के दृष्टान्त में, यीशु केवल दासों की बात करते हैं, लेकिन मुहरों के दृष्टान्त में, वह नगर के रहने वालों (लोगों) (लूका 19:14) की भी बात करता है। यह प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि यीशु अंततः यहूदी और और अन्यजातियों पर अगुवाई के प्रयासों का उल्लेख कर रहे थे ताकि वह उसके राजाओं के राजा बनने से हताश हो सके।[26] यहूदियों ने यीशु को मार डालने के लिए षड्यंत्र बनाया और रोमियों ने वास्तव में उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला (प्रेरितों के काम 2:23)। हालाँकि, यीशु को "राजाओं का राजा" बनने से रोकने की उनकी तमाम प्रयास विफल रहे (प्रकाशितवाक्य 1:5; 19:16)। यीशु मसीह ने सम्पूर्ण सृष्टि पर राज करने का अधिकार प्राप्त किया (प्रेरितों के काम 2:24)। यीशु मसीह स्वयं "राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया" (भजन 118: 22-23; मत्ती 21:42)।

राजपद पाकर लौटने पर, उसने अपने सेवकों और अन्य लोगों को पुरस्कृत किया या दण्डित किया। धनी मनुष्य का राजपद पाकर राजा लौटना, यीशु मसीह के महिमान्वित दूसरे आगमन प्रतीक है। अंतिम न्याय के दिन में, वह अपने विश्वासयोग्य दासों को उनकी विश्वासयोग्यता के अनुपात में पुरस्कृत करेगा (1 कुरिन्थियों 3:11-15)। उन्हें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में अधिक से अधिक सेवा प्रदान करने का अवसर दिया जाएगा।

अंतिम न्याय के दिन में, संसार के सभी लोगों (रहने वाले लोगों) का यीशु मसीह में उनके विश्वास या उनके अविश्वास (या अन्य देवताओं और धर्मों में झूठे विश्वास) के अनुसार उनका न्याय किया जाएगा। वह हर एक का उनके कामों के अनुसार न्याय करेगा : कि उन्हें जो कुछ उन्हें सौंपा गया था, उसके साथ उन्होंने क्या किया (रोमियों 2:6)। इस दृष्टान्त का वास्तविक अर्थ यह है कि दुनिया में हर एक व्यक्ति को जो कुछ भी यीशु मसीह ने उसे सौंपा है उसका सर्वोत्तम संभव उपयोग करना चाहिए (इफिसियों 5:15-16 से तुलना करें), चाहे वह यीशु मसीह को स्वीकार करे या न करे। इसके आलावा संदर्भ के प्रकाश में, लोगों को उत्सुकता से उद्धार के सुसमाचार का उपयोग करना चाहिए, जो उन्हें प्रचार किया गया है।

[26] आज देशों के उन नेताओं के बारे में सोचें जो सुसमाचार के प्रसार में बाधा डालने और मसीहियों को अपने देश के से बाहर करने के लिए हर तरह के उपाय करते हैं। ऐसे लोगों की मानसिकता यीशु मसीह और मसीहियों के प्रति अक्सर उत्पीड़न को उत्पन्न करती हैं, और उनकी घृणा यहाँ तक होती है कि वह हत्या में बदल जाती है।

राजा के निकट खड़े लोग (पद 24)। वे कहानी में के लोग हैं न कि कहानी सुनने वाले लोग। साथ ही, पद 26-27 में बोलने वाला मनुष्य राजा है, न कि प्रभु यीशु। फिर भी, जो कहा जाता है वह यीशु मसीह के मन की बातों की ओर इशारा करता है। मत्ती 13:41 में वे स्वर्गदूत हैं जो यीशु मसीह के निर्णयों का पालन करते हैं।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात्, एक केन्द्र-बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 19:11-27 में दस मुहर का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में पुरस्कार" के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "लोगों को यीशु मसीह ने जो कुछ भी सौंपा है, उसका सर्वोत्तम संभव उपयोग करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। परमेश्वर विश्वासयोग्यता और परिश्रम को पुरस्कृत करेगा, और वह अविश्वासी और लापरवाह लोगों को दण्डित करेगा!" संदर्भ के प्रकाश में, विश्वास में यह भी शामिल है कि कोई व्यक्ति यीशु मसीह और सुसमाचार के विषय में कैसी प्रतिक्रिया देता है। एक पूर्व भ्रष्ट चुंगी लेनेवाले को बचाने के लिए यीशु की आलोचना करने के बजाय, प्रत्येक व्यक्ति को यीशु मसीह इस बात में प्रतिक्रिया देनी चाहिए कि, वह खोये हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया।

निःस्वार्थ सेवा, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग यीशु मसीह द्वारा सौंपे गयी चीज़ों को अपने लिए न बचाकर सेवा करते हैं। वे इसे काम करने के लिए लेन-देन करते हैं और जो कुछ उन्हें सौंपा गया, उसको बढ़ाने का हर संभव प्रयास करते हैं। यदि सुसमाचार प्रचार करने का कार्य किसी व्यक्ति को सौंपा गया है, तो उसे यीशु के नक्शेकदम पर चलना चाहिए और खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनको बचाने के लिए बाहर जाना चाहिए। यदि अलग कार्य है, तो भी उसे बाहर जाना चाहिए और समाज में प्रभाव डालने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए और अपनी उपलब्धियों के फलों को बढ़ाना चाहिए।

यीशु मसीह उन लोगों से यह वायदा करते हैं कि, जो उसे और उसके सन्देश (बाइबल) को स्वीकार करते हैं, वे आत्मिक रूप से समृद्ध हो जाएँगे! लेकिन वह उन लोगों के लिए यह भी चेतावनी देता है कि, जो उसे और उसके सन्देश को अस्वीकार करते हैं, वे आत्मिक रूप से गरीब हो जाएँगे। अपने कार्यों की उपेक्षा करके, वे अंततः सब कुछ खो देंगे!

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांषों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक

वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक गद्यांशों में से जो कुछ भी पढ़ाया जाता है, उसकी तुलना में दृष्टान्त क्या सिखाता है?

दाख की बारी में मजदूरों का दृष्टान्त, तोड़ों का दृष्टान्त, और दस मुहर के दृष्टान्त का मुख्य सन्देश यीशु मसीह के दूसरे आगमन से सम्बन्धित हैं। सभी लोगों (और निश्चित रूप से सभी विश्वासियों) को यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि जो कुछ भी मसीह ने उन्हें सौंपा है या जिन पर उन्हें उसने भण्डारी ठहराया है, उन सभी का लेखा-जोखा उन्हें उसे देना होगा।

हालाँकि, इनमें से प्रत्येक दृष्टान्त का एक महत्वपूर्ण अर्थ है, लेकिन अलग सत्य को भी सिखाता है:

(1) दाख की बारी के मजदूरों का दृष्टान्त।

पढ़ें मत्ती 20:1-16। इस दृष्टान्त में, एक गृहस्थ ने दिन के अलग-अलग समय में मजदूरों को काम पर रखा था, लेकिन दिन के अन्त में, उसने उन सभी को बिलकुल एक ही समान मजदूरी दी। हालाँकि मजदूरों ने अलग-अलग मात्रा में काम किया, फिर भी अंत में, वह सभी को एक ही समान मजदूरी देता है।

दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर का पुरस्कार इस बात पर आधारित नहीं हैं कि परमेश्वर किसी व्यक्ति को कब बुलाता है या व्यक्ति कितने समय से विश्वासी है। परमेश्वर अपनी कृपा से हर उस व्यक्ति को अनन्त जीवन देता है जो उसके पास आता है, चाहे वह पहले प्रभु के पास आये या बाद में। परमेश्वर सभी विश्वास करने वाले लोगों का समान रूप से उद्धार करता है, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह अपने जीवन के किस स्तर पर परिवर्तित होकर प्रभु पर विश्वास करता है (लूका 23:40-43)! जिन मजदूरों को दिन के अंत में काम पर रखा गया था, उन्हें दिन के आरंभ में काम पर रखे गए लोगों के समान ही मजदूरी मिली क्योंकि उन सभी ने काम पर रखे गए समय के लिए पूरी ईमानदारी और लगन से काम किया।

(2) तोड़ों का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 25:14-30। इस दृष्टांत में, एक स्वामी ने अपने तीनों दासों को अलग-अलग धनराशि दी, लेकिन उसके लौटने पर उसने काम करने वाले दासों को एक ही जैसे पुरस्कारों से पुरस्कृत किया, बाद में इस बात को खोजने पर यह ज्ञात हुआ कि जो भी दोनों को सौंपा गया था, वह उसका दोगुना हो गया।

दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर के पुरस्कार दासों की विभिन्न क्षमताओं और जीवन में अलग-अलग अवसरों के कारण सफलता या परिणामों की विभिन्न योग्यताओं पर आधारित नहीं होते, बल्कि दासों की विश्वासयोग्यता और परिश्रम पर आधारित होते हैं, भले ही उनमें से प्रत्येक को कितनी भी क्षमताएँ और अवसर सौपें हों! परमेश्वर अनुग्रहकारी रूप से विश्वासयोग्य और परिश्रमी व्यक्ति को पुरस्कार देते हैं। अधिक प्रतिभाओं (तोड़ों) और अधिक परिणामों वाले सेवक को कम प्रतिभाओं (तोड़ों) और कम परिणामों वाले दासों की तुलना में अधिक पुरस्कार नहीं मिलेगा, क्योंकि दोनों ही समान रूप से विश्वासयोग्य बने रहे।

(3) दस मुहर का दृष्टान्त।

पढ़ें लूका 19:11-27। इस दृष्टान्त में धनी मनुष्य ने दस दासों में हर एक को एक समान ही धनराशि दी, लेकिन उसके लौटने

पर उन्होंने अलग-अलग पुरस्कारों के साथ उनके काम को पुरस्कृत किया, बाद में इस बात को खोजने पर यह ज्ञात हुआ कि कुछ ने दूसरों की तुलना में अधिक लाभ कमाया था।

दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर के पुरस्कार, विभिन्न क्षमताओं और अवसरों को देखते हुए, दासों के विश्वास और परिश्रम के विभिन्न अंशों पर आधारित होते हैं। विश्वास और परिश्रम की अलग-अलग उपलब्धियों (डिग्री) के लिए अलग-अलग पुरस्कार हैं! जिस दास में अधिक विश्वास्योग्यता और अधिक परिश्रम हैं, उसे भी एक बड़ी ज़िम्मेदारी दी जाएगी (1कुरिन्थियों 3:12-15 से तुलना करें)।

---

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षाओं का सारांश।

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में पुरस्कारों के बारे में दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षाएँ या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और वह हमें क्या *बनना* या क्या *करना* सिखाते है?
ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसा है।

अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर अनुग्रह के द्वारा प्रत्येक मसीही विश्वासी को पुरुस्कृत करेंगे।
हालाँकि, ये सभी पुरस्कार इसलिए नहीं दिए गए कि मसीही जन उनके काबिल हैं या उन्होंने इन्हें अर्जित किया है, बल्कि इसलिए कि सब कुछ परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह पर आधारित है। इफिसियों 2:10 के अनुसार, यहाँ तक कि "जो कार्य" मसीही जन करते हैं, वे परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित होते हैं!

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें किसके समान बनना है।

सही दृष्टिकोण या भावना के साथ परमेश्वर की सेवा करना और विश्वासयोग्यता और लगन से परमेश्वर की सेवा करना महत्वपूर्ण है :

परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग आत्मिक मामलों[27] के सम्बन्ध में काम के लिए मजदूरी की भावना के शिकार होने से बचते हैं, और इसके बजाय कि वे जिसे भी उपयुक्त समझे उसे पुरुस्कार देने वाले लोगों को पुरस्कृत करने के लिए परमेश्वर के ईश्वरीय अधिकार को मान्यता देते हैं।

परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग उन क्षमताओं और अवसरों के सम्बन्ध में विश्वासयोग्य और मेहनती हैं, जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें सौंपे हैं। परमेश्वर सफलता या परिणामों को पुरस्कृत नहीं करते, बल्कि वह विश्वासयोग्य और परिश्रमी लोगों को पुरस्कृत करता है।

परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग यह सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव प्रयास करते हैं कि उन्हें क्या सौंपा गया है, अर्थात् वे यथासंभव विश्वासयोग्य और मेहनती होते हैं। परमेश्वर विश्वास और परिश्रम की विभिन्न उपलब्धियों (डिग्री) को अलग-अलग पुरस्कार देते हैं।

(3) परमेश्वर के राज्य में एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त।

---

[27] अन्य धर्म यह सिखाते हैं – बौद्ध धर्म के अनुसार निर्वाण में जाना, हिन्दू धर्म के मोक्ष प्राप्त करना और इस्लाम में जन्नत में पुरस्कार पाना आदि।

“क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा: परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा” (मत्ती 25:29)। परमेश्वर ने हमें जो सौंपा है, यदि हम उसका उपयोग नहीं करते हैं, तो हम वह सब कुछ खो देंगे जो मूल रूप से हमें सौंपा गया था। लेकिन जब हम परमेश्वर द्वारा सौंपे गए वरदानों का उपयोग करते हैं, तब हमारी आत्मिक बढ़ोतरी होगी और हम धनवान बन जाएँगे!
